



# बीजू बुनकर का जादू

**Author:** Jaya Jaitly

**Illustrator:** Bhramara Nayak

**Translator:** Bhavna Pankaj

पठन स्तर ४



ओडीशा में संबलपुर के पास, शहर के शोर-शराबे से दूर जिलमिंदा गाँव की बात है। गर्मी की धूलभरी दुपहरी में नौ साल का बीजू पेड़ की छाया तले अपने बापा की राह ताक रहा था। वह बापा के साथ एक लंबी यात्रा पर जाने वाला था।

बीजू के कान में एक मक्खी भिनभिना रही थी। आँखों में सूरज की तिलमिली पड़ रही थी और पास की झोंपड़ियों में 'तूही, तूही' गाते चरखे बीजू को जैसे लोरी दे रहे थे। अपने साथ बैठे भूरे कुत्ते को देख कर बीजू ने सोचा क्यों न दोनों जन कुछ देर ऊँघ लें। लेकिन भूरा अपने जीभ बाहर किए गर्मी के मारे इतनी ज़ोर से हाँफ रहा था कि बेचारे बीजू की नींद हवा हो गई।

गाँव के अधिकतर बच्चों की तरह बीजू भी स्कूल नहीं जाता था। उसका स्कूल जाने को तो बहुत मन था लेकिन माँ-बापा कहते थे कि बुनकरों को पढ़ाई से ज़्यादा बुनाई आना ज़रूरी है। कभी-कभी वह भी ऑफ़िस में नौकरी करने को लेकर खयाली पुलाव पकाता था। फिर सोचता कि पीठ पर किताबों का बोझा लिए स्कूल जाने वाले बच्चे कौन से बहुत खुश दिखाई देते थे!

यही कह बीजू खुद को सांत्वना दिया करता था। उसके दोस्त का बड़ा भाई भी तो स्कूल गया था और फिर आगे पढ़कर डिग्री भी ले आया था। लेकिन फिर, फिर हुआ क्या? मुंबई की ऊँची इमारतों में कितने ही दफ़्तरों में जा-जाकर जूते चटखाए, नौकरी के लिए हाथ-पैर जोड़े। नौकरी मिली-लेकिन चाय की दुकान या अखबार के ठेले पर, या फिर चौकीदारी की। हार कर वह गाँव लौट आया। अब वह अपने बापा के साथ इक्कत की साड़ी बुनता है और कभी-कभी थोक के व्यापारियों को अपना माल बेचने मुंबई जाता है।



रही बीजू की बात, तो उसने पढ़ना-लिखना जेजी बापा से सीखा था। जब जेजी बापा, यानि उसके दादा जी, छोटे थे, तब वह गाँव के मास्टरजी के यहाँ काम करते थे। वहाँ उन्होंने कई मज़ेदार बातें सीखी थीं।

उन्होंने ही बीजू को हिसाब सिखाया था। नीले-पीले, लाल-हरे धागों के लच्छों को जोड़ना-घटाना, दोगुना करना, भाग करना... खेल ही खेल में बीजू ने गणित सीख लिया और कुछ देर के लिए स्कूल जाने का खयाल उसके मन से निकल गया।

जेजी बापा बीजू को बीते ज़मानों की कहानियाँ सुनाते-कैसे तरह-तरह के खज़ाने लिए समुद्री बेड़े सुदूर इंडोनेशिया में स्थित बाली जाया करते थे। इस खज़ाने में उनके गाँव में बुना-बना बेहतरीन कपड़ा होता था। बालीयात्रा के नाम से प्रसिद्ध इन जलयात्राओं की कहानियाँ सुनते-सुनाते बीजू तो जैसे खो ही जाता!

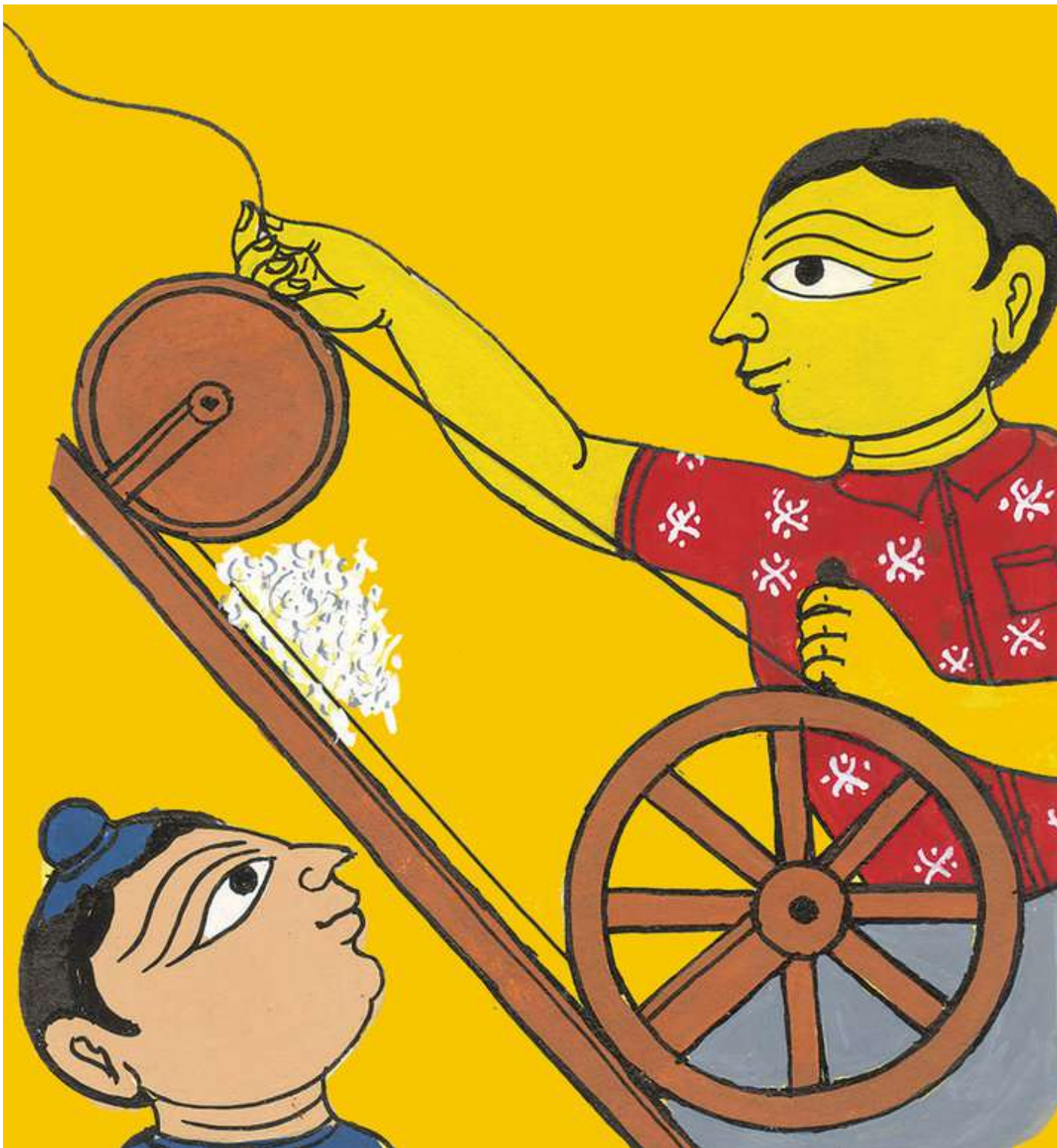
काश! मैं भी इसी तरह, अपने गाँव का कपड़ा मीलों दूर बसे शहरों में जाकर दिखा सकता, वह सोचता।

बीजू के बापा और दादा पुश्तैनी बुनकर थे। बुनने से पहले सूत को बाँधने और रंगने की कला जैसे उन्हें घुट्टी में मिली थी। पर यह काम आसान नहीं था। बीजू की, उसकी माँ, बहनों और परिवार के अन्य सदस्यों की सहायता के बिना बापा के लिए इतना सारा कपड़ा अकेले बुनना और दो जून रोटी जुटाना कठिन था।



अक्सर, बीजू अपनी माँ और बहनों के संग बैठ कर चरखियों पर रेशम का चमचमाता धागा चढ़ाता या फिर रूई के नर्म-नर्म गोलों से सूत कातता। दो बल्लियों के बीच सूत को लगाने और खींचने के काम में वह अपने बापा का हाथ बँटाता।

दो छोरों के बीच, बापा सूत को पारंपरिक बानगियों में बाँधते। रंगा हुआ सूत चितकबरे सागर की रंग-बिरंगी लहरों जैसा मालूम होता। सूखने पर रंगे हुए सूत को बापा करघे पर लगाते और बुनाई का काम शुरू करते।



रंग-बिरंगे धागों के इस सागर में बापा की फिरकी किसी नाव की तरह कभी ऊपर आती तो कभी नीचे जाती। और मंत्रमुग्ध सा बीजू उसे टकटकी लगाए देखता रहता। बुने हुए हिस्से को वह पीछे से लोहे की कंघी से समेटता और ऊपर की तरफ़ नज़र रखता कि कहीं बुनाई में कोई गड़बड़ तो नहीं हो रही।

फिरकी आगे-पीछे, आगे-पीछे भागती और कुछ देर बाद एक शानदार इक्कत की साड़ी तैयार हो जाती... दोनों तरफ़ झिलमिलाती किनारी और कितना बढ़िया, बारीक काम वाला पल्लू!

फिर माँ और बहनों के साथ साड़ी की सुताई-इस्त्री आदि करके, बीजू उसे सफ़ाई से ऐसा बाँधता कि बस, फिर तो साड़ी सिर्फ़ ग्राहक के लिए ही खुलती।

लेकिन आखिर माँ इन सुन्दर साड़ियों को क्यों नहीं पहनती, बीजू सोचता। हर साल दशहरे पर वह शहर की किसी बड़ी मिल में बनी दो सूती साड़ियाँ ख़रीदती थी। लेकिन बापा की बनाई जिन साड़ियों पर शहरों की औरतें इतना खुश होतीं, उन्हें माँ देखती भी नहीं थी। एक बार तो उसने पूछा, “माँ, कहो तो, तुम बापा की बनाई रेशमी साड़ियाँ क्यों नहीं पहनतीं?”

माँ अपने बेटे के भोलेपन पर मुस्कराई और बोलीं, “उन्हें तो मैं तभी पहनूँगी जिस दिन तुम या तुम्हारे बापा बहुत अमीर हो जाएँगे।”



“चल बेटा बीजू, उठ जा। तैयार है न जाने के लिए? बापा ने उसका गाल थपथपाया तो बीजू अपने सपनों की दुनिया से बाहर आया। “माँ और जेजी बापा से बिदा ली तूने,” बापा ने पूछा। बापा के हाथ में एक थैला और कंधे पर कपड़े के दो बड़े-बड़े बंडल थे।

“हाँ बापा,” बीजू यकायक उठ बैठा और अपने पिता के हाथ से तुरंत एक बंडल ले लिया।

बीजू को अच्छा लग रहा था कि अब वह बड़ा हो गया है। आखिर बापा उसे अपने साथ दिल्ली ले जा रहे थे और वह साड़ियों का बंडल उठाने में उनकी मदद भी कर रहा था। बापा ने कहा था कि यदि वे साड़ियाँ संबलपुर के व्यापारियों या शहरों के थोकदारों के पास बेचने की बजाय सीधा ग्राहकों के पास पहुँचा दें, तो हो सकता है उन्हें बेहतर दाम मिलें। बीजू पहली बार शहर जा रहा था। जेजी बापा ने बीजू के पिता को उसे साथ ले जाने के लिए मना ही लिया था। आखिर उसे भी यात्रा का अनुभव होना ज़रूरी था ताकि बड़ा होकर वह खुद किसी बालीयात्रा पर जा सके। बीजू के मन में लड्डू भी फूट रहे थे लेकिन थोड़ा सा डर भी था।

बाप-बेटा चलते-चलते आखिर बस स्टॉप पर पहुँच गए। चालीस मिनट धूप-छाँव में इंतज़ार करने के बाद एक पुरानी-सी खटारा बस ने खटर-पटर करते हुए उन्हें संबलपुर पहुँचाया। वहाँ से हीराकुड एक्सप्रेस में बैठकर दोनों नई दिल्ली के निज़ामुद्दीन स्टेशन के लिए रवाना हुए।





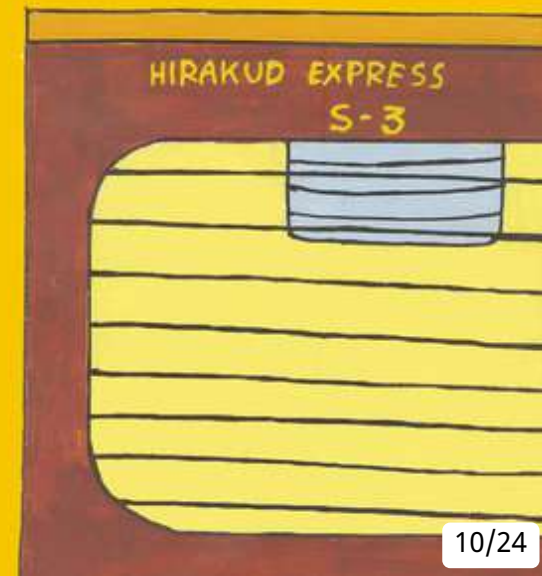
रेलयात्रा मज़ेदार थी लेकिन गाड़ी ऐसी ठसाठस भरी हुई थी कि बीजू सारी रात बापा के कंधे पर सिर रखकर सोया रहा।

“लौटेंगे तो इतनी परेशानी नहीं होगी। साड़ियाँ बेचने के बाद कुछ पैसे होंगे। तब उनसे पक्की सीटों की टिकट लेंगे रे बीजूआ!” बापा स्नेह से बोले।

बीजू चुप ही रहा। वह थका हुआ था, कुछ सहमा-घबराया-सा और भूख भी तो लगी थी।

जब कभी रेलगाड़ी रुकती और बापा स्टेशन पर उतरते तो बीजू को सावधान करते, “बीजू, साड़ियों के बंडलों पर पूरी नज़र रखना। उन पर बैठना, लेटना, जो भी करना लेकिन याद रहे कि अगर यह हमारे हाथ से गए तो हम कहीं के न रहेंगे।” बीजू सोचता बापा ने इतना ज़रूरी काम उसके ज़िम्मे किया है तो उसे बहुत गर्व महसूस हुआ। लेकिन साथ ही यह डर उसे खाए जाता था कि अगर गाड़ी बापा के लौटने से पहले ही चल पड़ी तो फिर क्या होगा? वह अकेला क्या करेगा?

लेकिन फिर गाड़ी के चलते ज्यों ही बापा गर्मागर्म पकौड़े और कुल्हड़ वाली चाय लेकर लौटते तो बीजू की जान में जान आती। फिर भी डर के मारे वह बापा से पूरा रास्ता यही कहता रहा कि उसका कुछ भी खाने या पीने का मन नहीं।



दिल्ली पहुँचकर बापा ने बंडल उठा लिए और बीजू ने थैला सँभाल लिया। थैला हलका ही था- एक-एक जोड़ी कपड़े, नीम के दातुन और दो गमछे। ये गमछे ही उनका तौलिया, रुमाल और परने थे। बापा ने, हमेशा की तरह, एक रुई का गोला और तकली भी रखी थी कि अगर कहीं इंतज़ार करना पड़े तो खाली बैठने की अपेक्षा कुछ कताई ही कर लें। खाली दिमाग शैतान का घर होता है और निठल्ले हाथ उसी का काम करते हैं, बापा हमेशा कहते।

स्टेशन से वे तीन पहिए वाली फटफटिया में बैठे और बीजू के चाचा, भबानी प्रसाद मेहर, के घर की ओर चल पड़े। घर मालवीय नगर इलाके के पास ही एक भीड़ भरी सड़क पर था। सड़क पर लगे बिजली के खंभों की तेज़ रोशनी को देखकर बीजू की आँखें चुँधिया गईं।





इतना सारा प्रकाश उसके पूरे गाँव में भी नहीं था। बड़ी-बड़ी दुकानों के बाहर शीशे की खिड़कियों में मुकेश कढ़ी साड़ियाँ, चमचमाते दुपट्टे, फ्रिज, टीवी और छोटे-बड़े डिब्बों में बंद कितनी ही चीज़ें सजी थीं जो बीजू ने पहले कभी नहीं देखी थीं।

एक दुकान में टीवी चल रहा था। बीजू ने झट से पहचान लिया। अरे, यह तो अमिताभ बच्चन है, वही जाना-माना हीरो! गाँव के सभी लड़के इसकी तरह ही तो बाल काढ़ते हैं। साथ ही दुकान पर सीखों पर टँगे तंदूरी मुर्गे ऐसे लग रहे थे जैसे किसी ने तार पर छोटे-छोटे बौनों को सुखाने डाल दिया हो! बीजू को मुर्गों की हालत पर तरस तो आया लेकिन वाह! क्या खुशबू थी उनकी।

अगर साड़ियों के अच्छे दाम मिले तो शायद बापा एक-आध सीख उसे भी दिला दें। उसके साथ ही की मैकेनिक की दुकान भबानी दादा की थी। भगवान का लाख-लाख शुक्र है, बापा बोले, कि इतने बड़े शहर में दो दिन रहने को ठिकाना तो था।

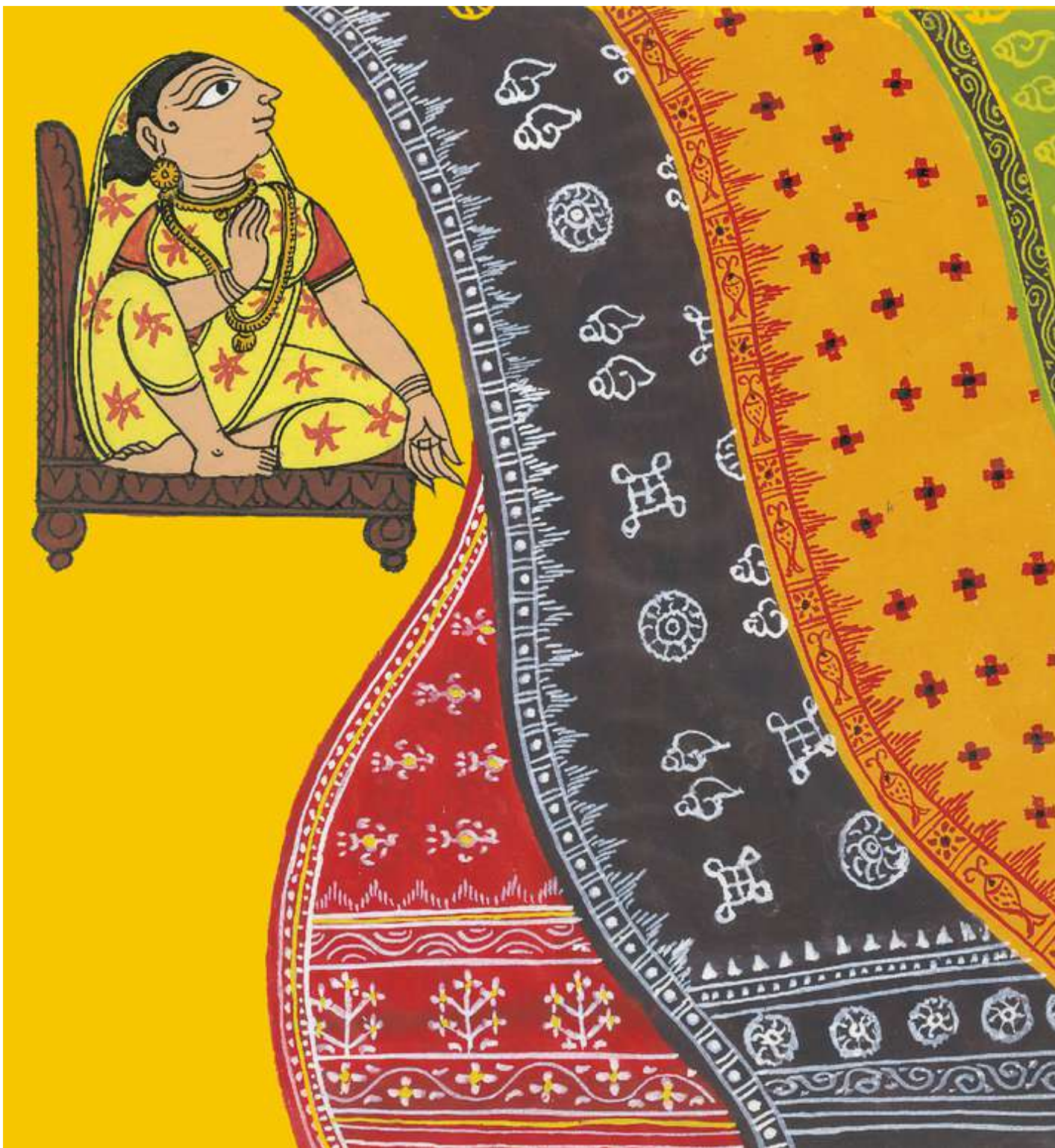
अगली सुबह बीजू की आँख देर से खुली। उसके बापा और भबानी दादा आपस में बात कर रहे थे। साड़ियों को कहाँ बेचा जाए? बापा ने एक कागज़ पर दादा के बताए पते और उन तक पहुँचने के रास्ते लिख लिए। क्या ही अच्छा होता अगर मैं बसों पर लिखे संदेश और सड़क किनारे लगे बड़े-बड़े पट्टों को पढ़ सकता, बीजू मन ही मन सोचने लगा।

फिर वह अपने बापा के साथ एक बस पर चढ़ा। बापा अपने ही खयालों में खोए थे। आस-पास क्या हो रहा है, उन्हें उसकी कोई खबर नहीं थी।



बीजू सड़क पर आते-जाते लोगों को देखने लगा। शोर, भीड़-भड़क्का था सब तरफ़... फिर भी लोग ऐसे चले जा रहे थे जैसे उन्हें कोई फ़र्क न पड़ता हो। बीजू सोचने लगा कि अगर वह इस शहर में खो गया, तो बस, गाँव लौटने का रास्ता तो फिर कभी नहीं मिलेगा।

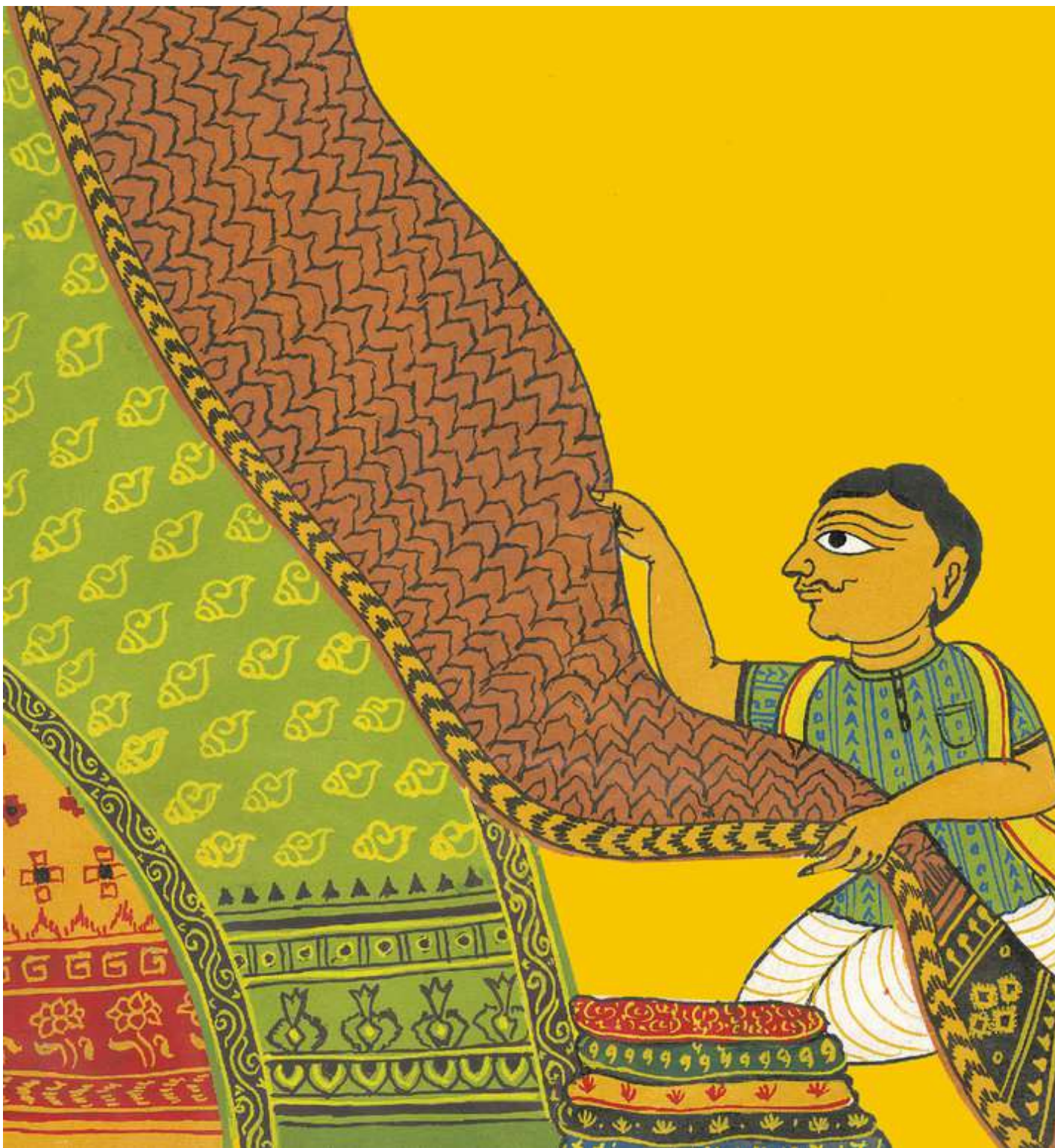
आखिर दोनों बस से उतरे! बीजू को लगा जैसे वे कई घंटों से यात्रा कर रहे थे। फिर रास्ते पर लगे पेड़ों की छाया तले करीब दो किलोमीटर चलने के बाद बीजू और बापा एक बड़े आलीशान मकान के बाहर पहुँचे। गेट पर खड़े दरबान ने अंदर किसी को फ़ोन किया। कुछ देर बाद एक आदमी उन्हें बीबीजी के पास अंदर लिवा ले गया।



बीजू और उसके बापा ने कमरे के बाहर अपनी-अपनी चप्पल उतारीं ठीक वैसे जैसे वे अपने घर में करते थे। हालाँकि जो आदमी उन्हें अंदर ले गया था, उसने तो अपने बड़े-बड़े चमड़े के जूते नहीं उतारे। बड़ी-बड़ी कुर्सियों और नर्म गद्दों से सजे उस विशाल कमरे में उन्हें नीचे कालीन पर बैठने को कह कर, वह आदमी वापिस लौट गया।

थोड़ी देर बाद, कहीं से एक बच्चा आकर उन्हें टुकुर-टुकुर देखने लगा। उम्र में वह बीजू से कुछ ही बड़ा लगता था। फिर वह भाग कर बाहर गया और अपनी माँ को पुकारने लगा, “माँ, देखो तुम्हारे लिए कोई दो बंडल लेकर आया है।”

कुछ क्षणों बाद, वह बच्चा अपनी माँ के साथ लौटा।



बीजू बंडल खोलने में बापा की मदद करने लगा और देखते-देखते पूरा कालीन रंग-बिरंगी रेशमी और सूती साड़ियों से भर गया। यूँ लगता था जैसे कोई इंद्रधनुष उस कमरे में गिरा हो और उसके सभी रंग आपस में उलझ गए हों।

‘देखिए, इस साड़ी का पल्लू... यह बड़ी पुरानी, पारंपरिक बानगी है... और इस साड़ी की बानगी तो बाहर के किसी डिज़ाइनर ने हमें दी थी... और यह देखिए, यह खालिस रेशम की साड़ी... और इस साड़ी के लिए हमें राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था...’ बापा बीबीजी को हर साड़ी की खासियत ऐसे बता बता रहे थे जैसे कोई कहानी हो।



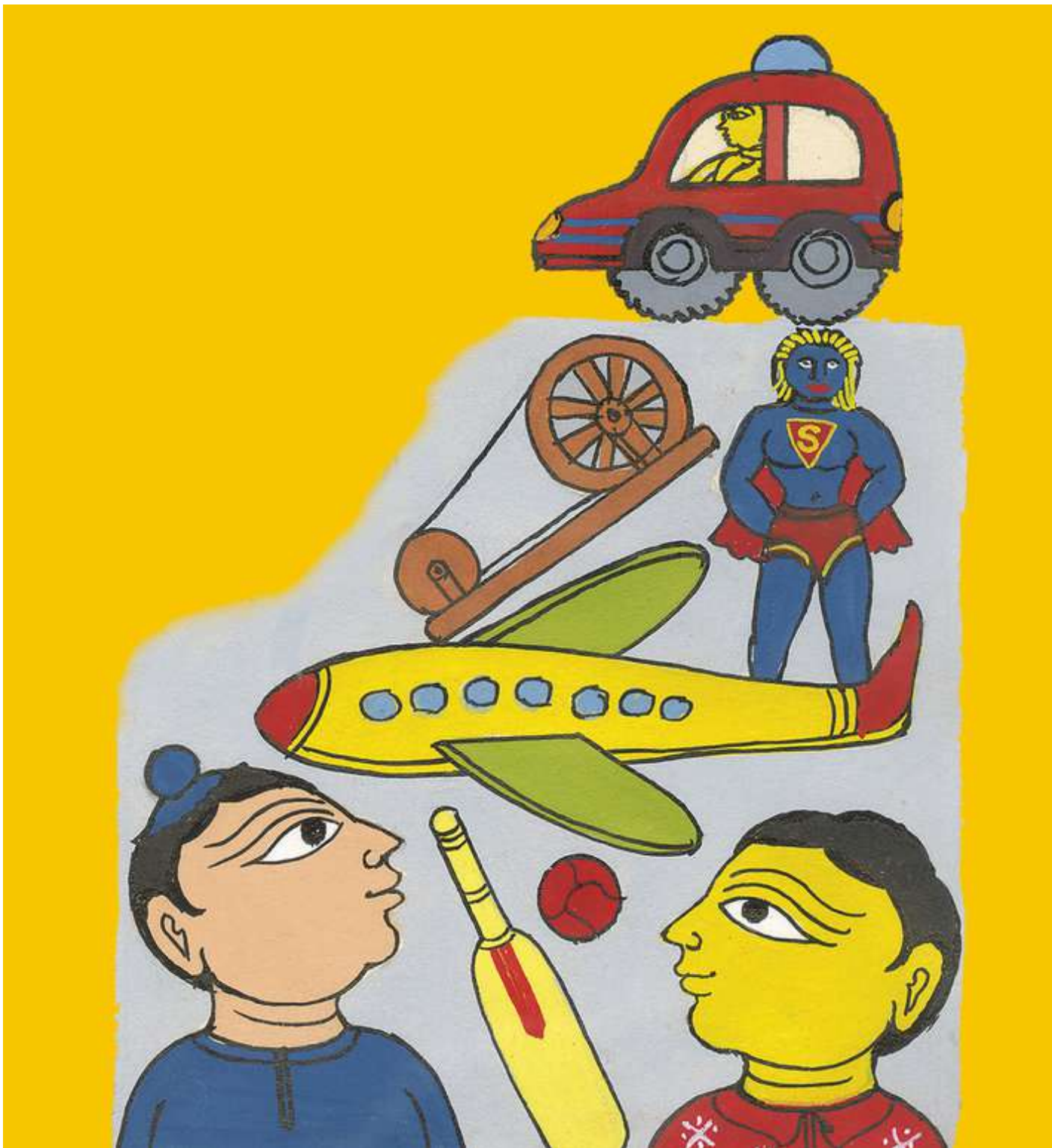
बीजू भी प्रत्येक साड़ी को बापा के कंधे पर रखने-जचाने में मदद कर रहा था जिससे बीबीजी खूब अच्छी तरह देख सकें कि वह साड़ी पहनी हुई कैसी लगेगी। कुछ देर तक तो वह लड़का अपनी माँ को साड़ियों को परखते-तौलते देखता रहा। लेकिन जल्दी ही ऊब गया। “मम्मी, क्या मैं इस लड़के को अपने कमरे में खेलने के लिए ले जाऊँ?” उसने अपनी माँ से पूछा।

माँ ने बिना ऊपर देखे हाँ-हूँ में सिर हिला दिया। साड़ियों की तह लगाने में बापा को मेरी ज़रूरत होगी, ऐसा सोचकर बीजू वहीं बैठा रहा। फिर उसने बापा की ओर देखा, कि शायद... लेकिन वे चुप थे। आखिर बीजू से... रहा नहीं गया और इस बड़े शहर के बड़े से घर में उस छोटे-से लड़के का बड़ा कमरा देखने उसके पीछे-पीछे चला गया।

“तुम्हारा नाम क्या है?” बच्चे ने पूछा।

“बृजेश्वर प्रसाद मेहर,” बीजू ने धीरे-धीरे जवाब दिया। “और तुम्हारा नाम?” “बबल्स,” बच्चा बोला।

बबल्स का कमरा तरह-तरह के रंग-बिरंगे खिलौनों और यंत्रों से भरा पड़ा था। बीजू वो सब देखकर चकित रह गया। बबल्स ने उसे एक बहुत बड़ी प्लास्टिक की बॉल पर बैठकर कमरे भर में फुदकना सिखाया। कपड़े-रूई से बना एक बहुत बड़ा भालू था जो पेट में लगी चाबी भरने पर बोलने लगता था।



मालवीय नगर की दुकान पर रखे टीवी से मिलते-जुलते कंप्यूटर पर बबल्स ने बीजू को न जाने कितने गेम्ज़ दिखाए। हाँ, साईकल की बात और थी! बबल्स ने बीजू को साईकल चलाने तो नहीं दी, लेकिन उसकी घंटी ज़रूर बजाने दी। करीब-करीब सभी खिलौने मशीन या बिजली से चलते थे। बीजू के घर में तो बिजली थी नहीं। इसलिए उन खिलौनों के साथ खेलने में बीजू को कुछ दिक्कत हुई।

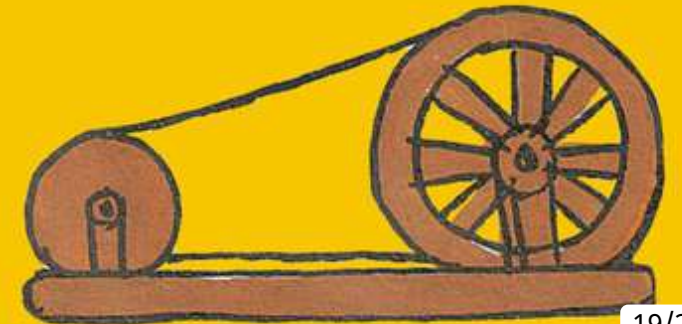
कैसी अनोखी दुनिया थी यह! खेलने के लिए खिलौनों की कोई कमी न थी। लेकिन उससे भी ज़्यादा हैरानी बीजू को यह देखकर हुई कि इतना सब कुछ होते हुए भी बबल्स उसके साथ खेलना चाहता था!

लेकिन बेचारा बीजू इन खिलौनों के साथ खेलना तो दूर, वह तो उन्हें ठीक तरह पकड़ भी नहीं पा रहा था। अनाड़ी बीजू, बुद्धू बीजू! बीजू झेंप गया और यही सोचकर उसे खुद पर शर्म आने लगी।

तभी उसकी नज़र कोने में पड़े एक चरखे पर गई। यह बात! चरखा तो वह ख़ूब चला लेता था, बिल्कुल अपनी माँ और बहनों की तरह। बबल्स ने बीजू से पूछा, “क्यों जी, क्या तुम इसे चला सकते हो? मेरे मामा ने इसे लाल किले में एक प्रदर्शनी से ख़रीदा था। उन्होंने दिया तो था कि मैं इससे खेलूँ। लेकिन मैं तो इसका सिर-पैर नहीं जानता।”

तब क्या था! बीजू अपना संकोच, शर्म सब भूल गया। और बड़े आत्मविश्वास के साथ बोला, “यह चरखा है। क्या तुम्हारे पास कुछ रूई है?” बबल्स ने ‘न’ में सिर हिला दिया।

बीजू अपने पिता के पास लौटा और अपने थैले में हाथ डालकर कुछ ढूँढने लगा।



कुछ धागा, रूई और तकली उसके हाथ लगे। “हाँ, मिल गया,” बीजू फुसफुसाया।

लेकिन बापा ने शायद सुना नहीं, वे बीबीजी को साड़ियाँ दिखाने में मसरूफ़ थे। बीजू बबल्स के कमरे में लौटा, चरखा आगे किया और लगा रूई कातने। देखते ही देखते नर्म-नर्म रूई का गोला एक साफ़ सुंदर धागे में बदलने लगा।

“अरे वाह! तुम तो जादूगर हो!” बबल्स चकित होकर बोला कि उसने आव देखा न ताव, बीजू को वहाँ से धकेला और खुद चरखे के आगे जम गया।

बीजू की तरह उसने भी कातने की कोशिश की लेकिन बिना सीखे कहीं सूत कतता है भला! “अरे सुनो, एक बार फिर इसे चलाओ, मुझे दिखाओ तुम क्या करते हो,” बबल्स अधिकार भरे स्वर में बीजू से बोला।

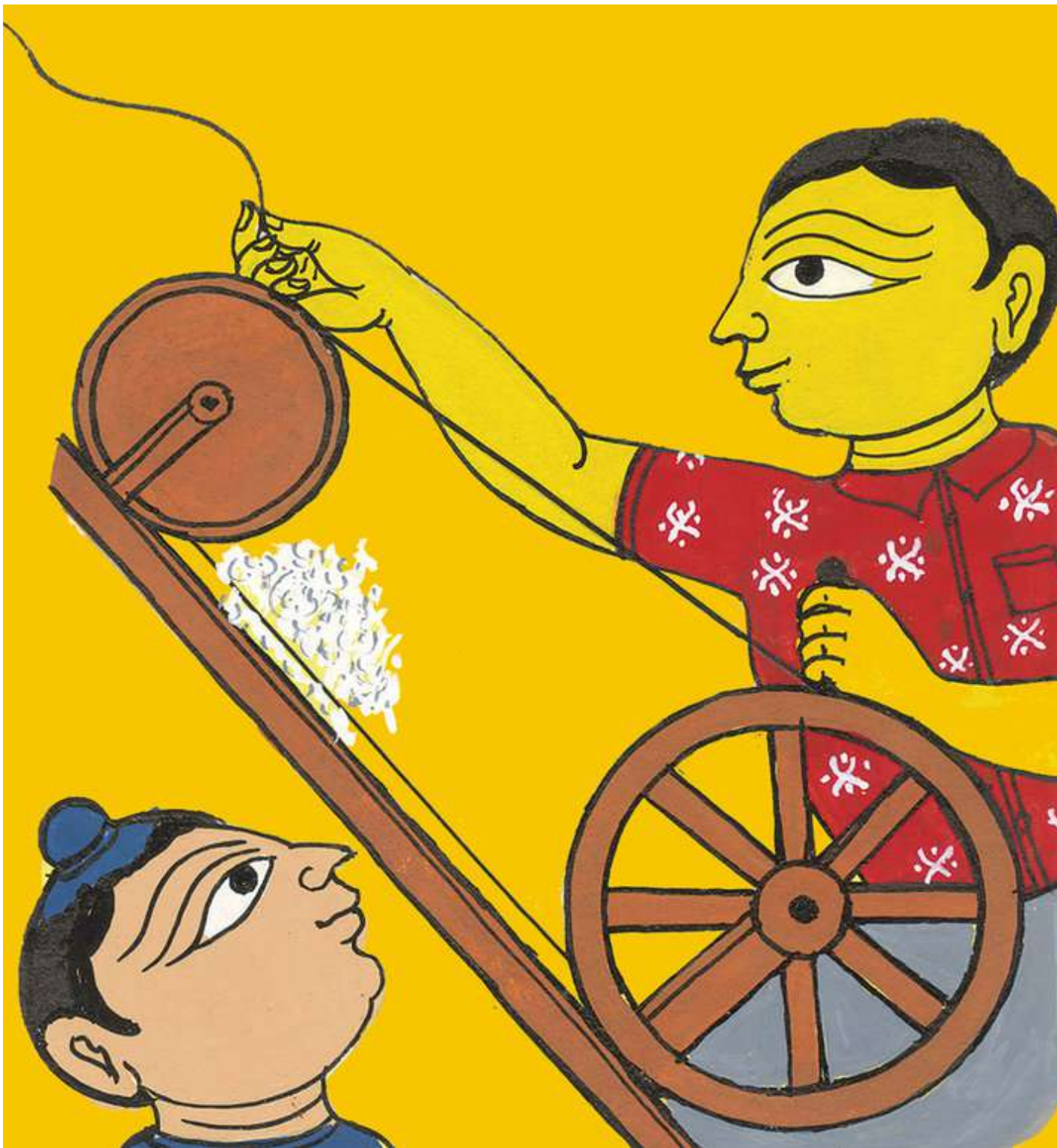
“अगर यह लड़का धागा बना सकता है तो मैं क्यों नहीं,” बबल्स ने सोचा। उसने कई बार कोशिश की पर न तो कताई हुई, न धागा बना। बीजू के चेहरे पर हलकी सी मुस्कान खेल गई। “यह देखो, इसे ऐसे करते हैं,” उसने बबल्स से कहा।

आधे घंटे की कड़ी मेहनत के बाद, बीजू ने बबल्स को चरखा चलाना सिखा ही दिया।

उसने बताया कैसे उसके गाँव में बापा सूत को करघे पर चढ़ाते हैं और वो सब साड़ियाँ जो उसकी माँ दूसरे कमरे में देख रही है न... वो सभी दूर ओडीशा के संबलपुर में उनके गाँव जिलमिंदा में बनी हैं।

क्या मज़ेदार बात है, बबल्स सोच रहा था... और यह लड़का, यह तो सचमुच किसी जादूनगरी से आया है। बीजू कितना खुश था। अब उसे लग रहा था कि वह भी किसी से कम नहीं!

तभी, उसे ध्यान आया कि उसे साड़ियाँ तह करने में बापा की मदद करनी चाहिए। वह वापिस उस बड़े कमरे में लौटा।



बापा खुश दिखाई दे रहे थे। बीबीजी भी बहुत खुश लग रही थीं। बहुत सारी साड़ियाँ उनके पास ही गद्दे पर धरी थीं। रुपयों की गड्डी बापा के पास रखी थी। बापा उसे रुमाल में बाँधने वाले थे।

“माँ, माँ, देखो इस लड़के ने मुझे जादू सिखाया,” बबल्स चिल्लाया।

“गोविंद मामा ने जो खिलौना दिया था, इसने उसमें एक तरफ़ से रूई डाली और दूसरी तरफ़ से धागा निकाला। है न कमाल!”

उसकी माँ खिलखिला कर हँस पड़ी। “क्यों न हो, आखिर इस बच्चे के पिता भी जादूगर जो ठहरे! एक से एक सुंदर साड़ी बुनने वाला जादूगर। अबकी बार सर्दियों में जब मेरी सहेलियाँ ये साड़ियाँ देखेंगी और पूछेंगी कि मैंने ये कहाँ से खरीदीं तो मैं किसी बड़ी दुकान का नाम बता दूँगी। ऐसी साड़ियाँ यहाँ किसी और के पास न हैं और न होंगी!”





बीजू के बापा नम्रता से बोले, “यह तो बपौती है, इसमें हमारा कुछ नहीं। हम अपने दादा-परदादा से जो सीखते हैं, वही आगे अपने बेटों को सिखा देते हैं।”

“और मैंने आगे बबल्स भैया को सिखा दिया,” बीजू सादगी से बोला। अपने नए दोस्त को बड़े भाई का दर्जा देकर वह उतना ही खुश था जितना अपने पिता की सफलता पर।

“तुम जो भी कहो माँ,” बबल्स शरारत भरी आवाज़ बोला, “लेकिन जब मेरे दोस्त पूछेंगे कि मैंने चरखा कातना किससे सीखा, तब मैं तो यही कहूँगा कि संबलपुर के जिलमिंदा गाँव में एक छोटा सा जादूगर रहता है... उसी ने सिखाया!”



## पटचित्र

पटचित्र ओडीशा, भारत की पारंपरिक चित्र शैली है। पटचित्र बनाने वाला पटचित्रकार कहलाता है। पट को मंदिर में चढ़ाया जाता है। पारंपरिक तौर से पटचित्र को कागज़ पर या इमली के बीज और खड़िया के चूरे के मिश्रण से कलफ़ लगे कपड़े पर बनाया जाता है। चित्र को पत्थर के रंगों, सीप के चूरे या प्राकृतिक लाख से रंगा जाता है। आजकल पटचित्र रेशम या ताड़ के पत्ते पर भी बनाए जाते हैं। चित्रों में मूलतः धार्मिक संदर्भ दर्शाए जाते हैं। देवी-देवताओं और राजा-रानी के चित्रों के चारों ओर ओडीशा के पशु-पक्षी और फल-फूलों की रंग-बिरंगी साज-सज्जा होती है।

**दस्तकार हाट समिति** भारतीय शिल्पकारों की एक विशाल संस्था है जो कि इस देश की पारंपरिक दस्तकारी से जुड़े लोगों के सामाजिक और आर्थिक उत्थान के लिए कार्यरत है। चार कहानियों की इस श्रृंखला को चित्रित करने के लिए प्रांतीय कला और शिल्प के नमूनों का इस्तेमाल किया गया है जिससे भारत की भिन्न-भिन्न सांस्कृतिक संवेदनाओं को साझा किया जा सके। हम युनेस्को, नई दिल्ली, के आभारी हैं जिनके योगदान से यह कार्य पूरा हुआ।





### Story Attribution:

This story: बीजू बुनकर का जादू is translated by [Bhavna Pankaj](#). The © for this translation lies with Pratham Books, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Based on Original story: '[Biju Spins Some Magic](#)', by [Jaya Jaitly](#). © Dastkari Haat Samiti, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

### Other Credits:

'Biju Bunkar ka Jaadu' has been published on StoryWeaver by Pratham Books. The development and production of this book has been supported by Anila and Dhiren Shethia. [www.prathambooks.org](http://www.prathambooks.org)

### Images Attributions:

Cover page: [A man surrounded by beautiful saris](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 2: [Boy looking at butterflies flying around a plant](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 3: [A fly buzzing in the corner](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 5: [A woman weaving cloth on a charkha](#), by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 6: [A boy spinning cotton to make yarn on a charkha, another boy observing](#), by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 7: [Colourful saris kept in a pile and one flowing in the corner](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 9: [A man and a boy with a white bundle sitting in a train](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 10: [Compartment window of a train](#), by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 11: [A lamp post and a white bundle in the corner](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 12: [A boy surrounded by TVs and radios](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak, 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: [https://www.storyweaver.org.in/terms\\_and\\_conditions](https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions)



Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

This book was made possible by Pratham Books' StoryWeaver platform. Content under Creative Commons licenses can be downloaded, translated and can even be used to create new stories - provided you give appropriate credit, and indicate if changes were made. To know more about this, and the full terms of use and attribution, please visit the following [link](#).

### Images Attributions:

Page 13: [Pieces of colourful fabrics flowing in the corner](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak , 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 14: [A boy and a man with luggage under a lamp post on a street](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak , 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 15: [A woman sitting on a chair watching saris flowing around her](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak , 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 16: [A man surrounded by flowing saris](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak , 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 18: [Two boys surrounded by varied toys](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak , 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 19: [A charkha in the corner](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak , 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 21: [A boy spinning cotton to make yarn on a charkha, another boy observing](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak , 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 22: [A man walking with a bundle on his back](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak , 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 23: [Floral design in the corners](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak , 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license. Page 24: [A boy in a garden with a butterflies](#) by [Bhramara Nayak](#) © Bhramara Nayak , 2010. Some rights reserved. Released under CC BY 4.0 license.

Disclaimer: [https://www.storyweaver.org.in/terms\\_and\\_conditions](https://www.storyweaver.org.in/terms_and_conditions)



Some rights reserved. This book is CC-BY-4.0 licensed. You can copy, modify, distribute and perform the work, even for commercial purposes, all without asking permission. For full terms of use and attribution, <http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/>

# बीजू बुनकर का जादू

(Hindi)

बीजू अपने परिवार के साथ ओडीशा के एक गाँव में कपड़े बुनने का काम करता है। भारत के बड़े-बड़े शहरों और विदेश में बेचने के लिए वे लोग तरह-तरह के बेहतरीन कपड़े बुनते हैं। फिर एक दिन बीजू अपने पिता के साथ साड़ियाँ बेचने दिल्ली जाता है। यह कहानी है उसकी यात्रा की और उसके शहरी दोस्त की जो बीजू को 'जादूगर' का खिताब देता है। जया जेतली की इस रोचक कथा को भ्रमर नायक ने पटचित्र शैली में चित्रित किया है।

This is a Level 4 book for children who can read fluently and with confidence.



Pratham Books goes digital to weave a whole new chapter in the realm of multilingual children's stories. Knitting together children, authors, illustrators and publishers. Folding in teachers, and translators. To create a rich fabric of openly licensed multilingual stories for the children of India and the world. Our unique online platform, StoryWeaver, is a playground where children, parents, teachers and librarians can get creative. Come, start weaving today, and help us get a book in every child's hand!

This book is shared online by Free Kids Books at <https://www.freekidsbooks.org>  
in terms of the creative commons license provided by the publisher or author.

Want to find more books like this?



<https://www.freekidsbooks.org>

Simply great free books -

Preschool, early grades, picture books, learning to read,  
early chapter books, middle grade, young adult,

Pratham, Book Dash, Mustardseed, Open Equal Free, and many more!

**Always Free – Always will be!**

#### Legal Note:

This book is in CREATIVE COMMONS - Awesome!! That means you can share, reuse it, and in some cases republish it, but only in accordance with the terms of the applicable license (not all CCs are equal!), attribution must be provided, and any resulting work must be released in the same manner.

Please reach out and contact us if you want more information: <https://www.freekidsbooks.org/about>

*Image Attribution: Annika Brandow, from You! Yes You! CC-BY-SA.*

*This page is added for identification.*